श्री कृष्ण चालीसा

॥ दोहा ॥

बंशी शोभित कर मधुर, नील जल्द तनु श्यामल ।
अरुण अधर जनु बिम्बा फल, नयन कमल अभिराम ॥

पुरनिंदु अरविन्द मुख, पिताम्बर शुभा साज्ल ।
जय मनमोहन मदन छवि, कृष्णचंद्र महाराज ॥

॥ चौपाई ॥

जय यदुनंदन जय जगवंदन ।
जय वासुदेव देवकी नंदन ॥१॥

जय यशोदा सुत नन्द दुलारे ।
जय प्रभु भक्तन के रखवारे ॥२॥

जय नटनागर नाग नथैया ।
कृष्ण कन्हैया धेनु चरैया ॥३॥

पुनि नख पर प्रभु गिरिवर धारो ।
आओ दीनन कष्ट निवारो ॥४॥

बंसी मधुर अधर धरी तेरी ।
होवे पूरण मनोरथ मेरी ॥५॥

आओ हरी पुनि माखन चाखो ।
आज लाज भक्तन की राखो ॥६॥

गोल कपोल चिबुक अरुनारे ।
मृदुल मुस्कान मोहिनी डारे ॥७॥

रंजित राजिव नयन विशाला ।
मोर मुकुट वैजयंती माला ॥८॥

कुंडल श्रवण पीतपट आछे ।
कटी किंकिनी काछन काछे ॥९॥

नील जलज सुंदर तनु सोहे ।
छवि लखी सुर नर मुनि मन मोहे ॥१०॥

मस्तक तिलक अलक घुंघराले ।
आओ श्याम बांसुरी वाले ॥११॥

करि पी पान, पुतनाहीं तारयो ।
अका बका कागा सुर मारयो ॥१२॥

मधुवन जलत अग्नि जब ज्वाला ।
भये शीतल, लखिताहीं नंदलाला ॥१३॥

सुरपति जब ब्रिज चढ़यो रिसाई ।
मूसर धार बारि बरसाई ॥१४॥

लगत-लगत ब्रिज चाहं बहायो ।
गोवर्धन नखधारी बचायो ॥१५॥

लखी यशोदा मन भ्रम अधिकाई ।
मुख महँ चौदह भुवन दिखाई ॥१६॥

दुष्ट कंस अति ऊधम मचायो ।
कोटि कमल कहाँ फूल मंगायो ॥१७॥

नाथी कालियहिं तब तुम लीन्हें ।
चरनचिंह दै निर्भय किन्हें ॥१८॥

करी गोपिन संग रास विलासा ।
सब की पूरण करी अभिलाषा ॥१९॥

केतिक महा असुर संहारयो ।
कंसहि केश पकडी दी मारयो ॥२०॥

मातु पिता की बंदी छुडाई ।
उग्रसेन कहाँ राज दिलाई ॥२१॥

माहि से मृतक छहों सुत लायो ।
मातु देवकी शोक मिटायो ॥२२॥

भोमासुर मुर दैत्य संहारी ।
लाये शत्दश सहस कुमारी ॥२३॥

दी भिन्हीं त्रिन्चीर संहारा ।
जरासिंधु राक्षस कहां मारा ॥२४॥

असुर वृकासुर आदिक मारयो ।
भक्तन के तब कष्ट निवारियो ॥२५॥

दीन सुदामा के दुःख तारयो ।
तंदुल तीन मुठी मुख डारयो ॥२६॥

प्रेम के साग विदुर घर मांगे ।
दुर्योधन के मेवा त्यागे ॥२७॥

लाखी प्रेमकी महिमा भारी ।
नौमी श्याम दीनन हितकारी ॥२८॥

मारथ के पार्थ रथ हांके ।
लिए चक्र कर नहीं बल थाके ॥२९॥

निज गीता के ज्ञान सुनाये ।
भक्तन ह्रदय सुधा बरसाए ॥३०॥

मीरा थी ऐसी मतवाली ।
विष पी गई बजाकर ताली ॥३१॥

राणा भेजा सांप पिटारी ।
शालिग्राम बने बनवारी ॥३२॥

निज माया तुम विधिहीन दिखायो ।
उरते संशय सकल मिटायो ॥३३॥

तव शत निंदा करी ततकाला ।
जीवन मुक्त भयो शिशुपाला ॥३४॥

जबहीं द्रौपदी तेर लगाई ।
दीनानाथ लाज अब जाई ॥३५॥

तुरतहिं वसन बने ननन्दलाला ।
बढ़े चीर भै अरि मुँह काला ॥३६॥

अस अनाथ के नाथ कन्हैया ।
डूबत भंवर बचावत नैया ॥३७॥

सुन्दरदास आस उर धारी ।
दयादृष्टि कीजे बनवारी ॥३८॥

नाथ सकल मम कुमति निवारो ।
छमोबेग अपराध हमारो ॥३९॥

खोलो पट अब दर्शन दीजे ।
बोलो कृष्ण कन्हैया की जय ॥४०॥

॥ दोहा ॥

यह चालीसा कृष्ण का, पथ करै उर धारी ।
अष्ट सिद्धि नव निद्धि फल, लहे पदार्थ चारी ॥

paramsoul.com